Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

सबसे बड़ा सुख : एक वृद्धाशक्ति

सुरेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
अतर्रा पी० जी० कालेज अतर्रा बांदा, उत्तरप्रदेश
ईमेल - shuklasuresh1992@gmail.com

शकुन्तला ब्रजमोहन द्वारा लिखी यह कहानी हमारे आधुनिक विकसित भारत की कहानी है भारत एक सुदृढ़ अर्थशक्ति के रूप में उभर रहा है। सभी वर्ग अपने को उच्चवर्ग में तब्दील करना चाहते है। आज स्त्री-पुरुष दोनों धनार्जन में लीन है परन्तु समाज की व्यवस्था भी इससे कहीं न कहीं प्रभावित होती है। आज संस्कृति का देश कहे जाने वाले भारत संस्कृति का पतन सहर्ष स्वीकार कर रहा है। वह आर्थिक रूप से तो मजबूत हो रहा है परन्तु अपनी परम्परा से दूर होता जा रहा है।

'सबसे बड़ा सुख कहानी' वृद्धजीवन व बालजीवन के बदलते स्वरूप पर आधारित कहानी है। परिवार में पति-पत्नी दोनों जब नौकरीपेशा हो जाते है तब उनके पास घर के लिए सम जिससे वे घर की जिम्मेदारी नहीं निभा पाते इससे धन से तो वे मंहगे समान खरीद लेते है मगर रिश्ते कमजोर पड़ जाते हैं हमारे भारतीय समाज में पुरुष का कार्य धनार्जन था तथा स्त्री का कार्य घर, परिवार सम्भालने का था।

इस कहानी की वृद्धा कमला बेटे, बहू के होते हुए अकेले जीवन जीने को मजबूर है। कमला के बेटे ब्रजेश अपनी पत्नी के साथ अपने पिता के व्यवसाय को संभालता है। उनके एक बेटा है राजू । पति-पत्नी दोनों व्यवसाय के कार्यों में व्यस्त रहते है वे न तो माँ का ध्यान दे पाते है न ही अपने बेटे का आखिर इतनी भी क्या मजबूरी है कि माँ के होते हुए एक बच्चे को माँ के प्रेम से वंचित रखा जाय। आज माँ का हृदय इतना भी मामताहीन कैसे होता जा रहा है।

ब्रजेश व उनकी पत्नी को राजू का घर पर रहना व दादी के पास रहना पसंद नहीं होता है। उन्हें लगता कि दादी का प्रेम राजू को बर्बाद कर देगा। आखिर माँ के पास बच्चे को प्रेम देने का समय नहीं है तो बच्चा प्रेम के लिए कहाँ जाय ध हमारे भारतीय परिवेश में दादी को दादी माँ व नानी को नानी माँ भी कहा जाता है बच्चे को अपने दादी नानी से माँ के समान ही प्रेम मिलता है जब स्त्री माँ बनती है तो उसके पास अनुभव की कमी होती है। एक अच्छी दादी व नानी माँ ही माँ को पालन-पोषण करना सीखती हैं।

बच्चों और बूढों का साथ एक दूसरे को खुशियों से भर देता है हमारे बुजुर्ग अपने नाती-पोते को पाकर पुनः बचपन जीते हैं परन्तु उन्हीं के ऊपर जब ऐसा आरोप लगता है तो उनका मन दुःख से भर जाता है। "बहू के वे शब्द, जो उसने ब्रजेश तथा नौकरों के सामने कहे थे, कांटे के समान उन्हें चुभ रहे थे। जिस पोते के प्यार में डूबकर वह पति का गम भी भूल गयी थी, उसी के प्रति ये शब्द सुनने पड़े यहाँ आपके लाड़-प्यार ने इसे बिगाड़ दिया है। इसके चरित्र निर्माण के लिए हास्टल ही उचित स्थान है, यहाँ रहकर कुछ बन नहीं पाएगा ।"१
आज की पीढ़ी बच्चों को घर से दूर रख स्वयं दोषारोपण से बचना व अपनी जिम्मेदारी से बचना चाहती है ।हमारी संस्कृति में मनुष्य सोलह संस्कारों का निर्वाह करते हुए जीवन यापन करता था। बच्चें की प्रथम शिक्षक माँ को बताया गया है। आज बच्चों को प्लेस्कूल में भेजा जाता है। लोग पैसा खर्च कर बच्चों की जिम्मेदारी किसी और को तो सौंप देते है परन्तु जो हमारे बुजुर्ग बच्चों के अन्दर संस्कार का बीज बोते है वो बीजारोपण कहाँ से होगा जब बच्चे को बचपन से ही घर से दूर कर दिया जाता है तो वह बड़ा होकर घर के प्रति क्या ही लगाव रखेगा।

राजू को जबरदस्ती हास्टल भेजा गया वह रोते बिलखते हुए हास्टल जा रहा था दादी को तो वह छोड़ ही नहीं रहा था परन्तु माँ की डांट व पिता के हिदायतों को लेकर वह हास्टल के लिए निकल पड़ा और जाते जाते दादी से कहा "
दादी मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ, तुम जरूर मेरे पास आओगी, यह मैं जानता हूँ, क्योंकि इस घर में एक तुम ही तो हो,

जो मुझे प्यार करती हो। मैं यह भी जानता हूँ कि तुम्हारी भी इस घर में कोई सुनता नहीं है। तुम्हें भी किसी दिन ये लोग घर से निकाल देंगें ।"२

नाती की यह बात दादी के दिल को अन्दर से भेद गयी उन्हें लगा राजू कहीं न कहीं सच ही बोल रहा है। राजू के जाने के बाद दादी का मन घर में बिलकुल भी न लग रहा था वे खाने की मेज पर खाना खाने नहीं गयी । उन्हें राजू की खाली कुर्सी देख रोना आ जाता था । चार दिन बाद ही ब्रजेश ने उनके सामने एक नया प्रस्ताव रखा। उसने कमला से कहा कि आप यहाँ अकेली बोर होती हैं क्यूँ न वृद्धाश्रम चली जाएं। यह प्रस्ताव भी न माँ की जिम्मेदारी से बचना था कमला एक स्वाभिमानी स्त्री थी । वे उसी दिन दो घंटे में ड्राईवर के साथ वृद्धाश्रम चली गयी थोड़ी देर के लिए कमला को दुःख हुआ फिर कमला ने अपने इस दुःख को वरदान में तब्दील होते देखा ।

उन्हें लगा कि मैं तो तन मन, धन से स्वस्थ्य हूँ तब मेरे बेटे-बहू ने मेरे साथ यह बर्ताव किया और मेरे स्वाभिमान को चोटिल किया। उन बुजुर्गों का क्या जिनके पास न धन है और न ही स्वस्थ्य तन है। उनके ऊपर क्या बीतती होगी कमला ने हार न मानकर स्वाभिमान के साथ वृद्धाश्रम के सभी वृद्धों के सामने अपना विचार प्रकट किया और सभी वृद्ध संगठित होकर अन्य गरीब, मजबूर वृद्धों के मदद के लिए एक योजना बनाई उन्होंने अपनी कोठियों को वृद्धाश्रम में तब्दील किया। अपने धन से उपयोगी समान एकत्रित किये ताकि कोई भी वृद्ध पैसों के बिना अपमान का जीवन न जिये वे आकर इन आश्रमों में आराम से रह सकें और एक खुशहाल जीवन जी सकें ।

कमला के इन प्रयासों से युवाओं की सोच व व्यवहार में बदलाव आया उन्हें लगा कहीं उनके घर के बुजुर्ग भी अपना धन न इन वृद्धाश्रम में दान दे दें इसलिए उन्होंने वृद्धों का सम्मान करना शुरू कर दिया ।

शकुन्तला ब्रजमोहन ने इस कहानी में आधुनिक समाज के यथार्थ को बखूबी प्रदर्शित किया है। आज युवाओं का अपने बुजुर्गों के साथ ऐसा व्यवहार हमारे लिए कलंकित है। हमारे संस्कृति में बुजुर्ग हमारे घर के विशाल वृक्ष के समान होते थे जिनकी छाया में हम पलते-बढ़ते थे । वे हमारे घर के मुखिया होते थे। उनकी निगरानी में घर का सम्पूर्ण कार्य पूर्ण होते थे परन्तु आज वे घर के किसी कोने में बेकार वस्तु की तरह पड़े होते है। कोई उनसे बात तक करना पसंद नहीं करता, फिर ,आप बोर हो रहे होगें, का बहाना बना कर उन्हें वृद्धाश्रम की राह दिखा दिया जाता है। यह बहुत ही शर्मनाक है । हमें पुनः अपने संस्कृति की ओर लौटने की आवश्यकता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. शकुन्तला ब्रजमोहन, मेरा घर कहाँ हैद्दकहानी संग्रह, सबसे बड़ा सुख- कहानी, पृष्ठ संख्या ९० ।

२. वही, पृष्ठ संख्या ९० ९१ ।